SANGITA

हरबर्टीय विधि || हिंदी शिक्षण विधि

आज की हिंदी शिक्षण विधियों में हम **हरबर्टीय विधि** की चर्चा करेंगे और इसे अच्छे से समझेंगे

हरबर्टीय विधि || हरबर्ट की पंचपदी विधि

⇒हरबर्ट की पाठ योजना प्राचीनतम पाठ योजनाओं में से एक है। इस पाठ योजना के जन्मदाता प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **हरबर्ट** है। प्रो. हरबर्ट की अधिगम के संबंध में यह धारणा है कि प्रत्येक छात्र बाहर से मिलने वाले ज्ञान को संचित करता रहता है, यदि नवीन ज्ञान को छोटे-छोटे सोपानों में बाँटकर उसे पूर्व संचित ज्ञान से संबंधित करके पढ़ाया जाये तो छात्र उसे अधिक शीघ्रता एवं सुगमता से ग्र॒हण करता है।

हरबर्ट पाठ योजना में **स्मृति स्तर** पर सीखने को अधिक प्रभावशाली माना जाता है। यह पाठ योजना विषय-वस्तु केन्द्रित है। इसमें पाठ के छात्रों के सम्मुख प्रस्तुतीकरण की आधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और उस पर अधिक बल दिया जाता है, छात्रों की अपनी आवश्यकताओं, रुचियों, मूल्यों आदि को इसमें अधिक स्थान नहीं दिया जाता है।

हरबर्ट ने कक्षा शिक्षण के लिए सर्वप्रथम निम्न **चार पदों** का प्रतिपादन किया-

- हिंदी साहित्य वस्तुनिष्ठ प्रश्न

स्पष्टता: तथ्यों व विषयसामग्री को शिक्षार्थी के समक्ष स्पष्टता से प्रस्तुत करना।

सम्बद्ध: प्रस्तुत किए जाने वाले तथ्यों या नवीन ज्ञान को बालक के पूर्व ज्ञान से सम्बद्ध करना।

व्यवस्था: बालक के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले तथ्यों व नवीन ज्ञान को व्यवस्थित रूप देना।

विधि:

हरबर्ट ने उपर्युक्त चार सोपानों की विवेचना की जिसे उसके शिष्यों/अनुयायियों ने अधिक स्पष्ट व महत्वपूर्ण बनाने का प्रयास किया। उसके शिष्य **जिलर** ने सर्वप्रथम 'स्पष्टता' को दो भागों में विभक्त किया।

(1) प्रस्तावना

(2) प्रस्तुतीकरण

हरबर्ट के एक अन्य शिष्य **राइन** ने इनमें एक उपकथन और जोड़ा, वह था- 'उद्देश्य'। इस परिवर्तन के बाद प्रथम दो पद इस प्रकार हो गए-

(1) (अ) प्रस्तावना

(ब) उद्देश्य कथन

(2) प्रस्तुतीकरण

इसके बाद **हरबर्ट के अनुयायियों ने** हरबर्ट के शेष तीन पदो के नामों में भी इस प्रकार परिवर्तन कर दिए-

सम्बद्ध- तुलना

व्यवस्था- सामान्यीकरण

विधि- प्रयोग

इस प्रकार हरबर्ट के शिक्षण पद अन्तिम रूप से इस प्रकार है-

(1) (अ) प्रस्तावना

(ब) उद्देश्य कथन

(2) प्रस्तुतीकरण

(3) तुलना

(4) सामान्यीकरण

(5) प्रयोग

प्रस्तावना-

वर्तमान पाठ को पढ़ने के लिए छात्र को मानसिक तैयारी करना इस चरण के अन्तर्गत है। प्रस्तावना में अध्यापक दो या तीन प्रश्नों के द्वारा छात्रों से उत्तर लेकर यह निकलवाने का प्रयास करता है कि आज कक्षा में उसे क्या पढ़ाया जाने वाला है। प्रसंग का ज्ञान कराकर वस्तुतः छात्र के पूर्वज्ञान को नवीन ज्ञान से सम्बद्ध करने का प्रयास प्रस्तावना में किया जाता है। पाठ की सफलता बहुत हद तक एक अच्छी प्रस्तावना पर निर्भर करती है।

प्रस्तुतीकरण-

सम्पूर्ण पाठ को दो या तीन खण्डों में विभक्त कर छात्रों के सम्मुख इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे समग्र पाठ्य-सामग्री उनकी समझ में आ जाए। इसे पाठ का प्रस्तुतीकरण भी कह सकते है। इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा किया गया आदर्श वाचन छात्रों का अनुकरण वाचन काठिन्य निवारण एवं केन्द्रिय बोध के प्रश्न प्रस्तुत किये जाते है।

तुलना का सहयोग-

छात्रों के पूर्व संचित ज्ञान एवं वर्तमान नवीन ज्ञान की तुलना की जाती है तथा अन्य विषयों के ज्ञान का स्थानान्तरण भी किया जाता है। भाषा शिक्षण में आने वाली कठिनाइयों का निवारण, व्याख्या, शंका समाधान आदि की अपेक्षा शिक्षक से छात्रों को रहती है। योग्य शिक्षक उपयुक्त उदाहरणों, दृष्टान्तों से विषय को सरल, सुबोध बनाकर प्रस्तुत करता है।

सामान्यीकरण-

विद्यार्थी संचित ज्ञान के आधार पर सामान्य बातों को समझकर उसका सामान्यीकरण करते हैं। गद्य शिक्षक में इस स्तर पर पुनरावृत्ति के प्रश्न जबकि कविता शिक्षण में भाव साम्य की कविताएँ देकर सामान्यीकरण किया जाता है। अपने पूर्व संचित ज्ञान की प्रस्तुत पाठ से तुलना कर विद्यार्थी स्वमान्य सिद्धान्तों का पता (निष्कर्ष) लगाते हैं। व्याकरण के पाठों में सामान्यीकरण विशेष लाभदायी होता है।

प्रयोग-

सीखे हुए नवीन ज्ञान से निर्मित सामान्य बनाकर विद्यार्थियों से उनका प्रयोग भी कराया जाता है। इसके लिए विद्यार्थी को कहा कार्य या गृहकार्य लिखित रूप में करके लाने को कहा जाता है। पढ़ाये गये विषय को विद्यार्थी ने किस सीमा तक समझा है। इसका मुल्यांकन भी इस सोपान में किया जाता है।
हरबर्टीय विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। इससे शिक्षण में क्रमबद्धता रहती है। भाषा शिक्षा में ये सोपान अत्यन्त लाभप्रद होते है। विज्ञान शिक्षण के लिए यह विधि उपयोगी नहीं है।

आगमन शिक्षण विधि सार ||

आगमन शिक्षण विधि में पहले उदाहरण प्रस्तुत कर उदाहरणों द्वारा नियमों का निर्धारण किया जाता है। अर्थात छात्रों के समक्ष पहले बहूत से उदाहरणों, तत्वों एवं वस्तुओं का प्रदर्शन कर नियमों का निर्धारण करना ही आगमन विधि है। यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है।

आगमन विधि(Aagman Shikshan Vidhi)

⇔ आगमन का अर्थ है प्रत्यक्ष उदाहरणों, अनुभवों तथा प्रयोगों से निष्कर्ष निकालना।
⇒ एक ऐसी शिक्षण प्रणाली जिसमें उदाहरणों की सहायता से सामान्य नियम का निर्धारण किया जाता है, आगमन शिक्षण-विधि कहलाती है।

⇔ आगमन विधि में अनुभवों, प्रयोगों तथा उदाहरणों का विस्तृत अध्ययन करके नियम बनाये जाते हैं।
⇒ इस विधि में तर्क करते हुए 'विशिष्ट से सामान्य की ओर' तथा 'स्थूल से सूक्ष्म की ओर' आगे बढ़ते हैं।

⇔ इस विधि द्वारा शिक्षण करते समय शिक्षक बालकों के समक्ष कुछ विशेष परिस्थितियाँ एवं उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन उदाहरणों के आधार पर बालक तार्किक ढंग से विचार-विमर्श करते हुए किसी विशेष सिद्धान्त, नियम अथवा सूत्र पर पहुँचते हैं।
⇒नियमों सूत्रों आदि का प्रतिपादन करते समय इस विधि में बालक अपने अनुभवों, मानसिक शक्तियों तथा पूर्व-ज्ञान का प्रयोग करता हैं।

परिभाषा:–

जा०यसी – ''आगमन विशेष दृष्टान्तों की सहायता से सामान्य नियमों को विधिपूर्वक प्राप्त करने की क्रिया है।
यंग – इस विधि में बालक विभिन्न स्थूल तथ्यों के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का पं०रयोग करते हुए स्वयं किसी विशेष सिद्धान्त, नियम अथवा सूत्र तक पहुँचता है।
लैण्डल – ''जब बालकों के समक्ष अनेक तथ्यों, उदाहरणों एवं वस्तुओं को प्रस्तुत किया जाता है, तत्पश्चात् बालक स्वयं ही निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करते है, तब वह विधि आगमन विधि कहलाती है।''

- हिंदी साहित्य वस्तुनिष्ठ प्रश्न

⇒ आगमन विधि में बालक स्वयं तथ्यों, प्रयोगों एवं उदाहरणों की सहायता से किसी सूत्र या नियम विशेष का ज्ञान प्राप्त करता है तथा पूर्णरूप से सक्रिय रहता है अतः इस विधि द्वारा अर्जित किया गया ज्ञान ठोस एवं अधिक स्थाई होता हैं।
⇔ इसमें बालक की विभिन्न मानसिक शक्तियों का विकास भी होता है।

आगमन विधि द्वारा शिक्षण करते समय मुख्यरूप से चार सोपानों का प्रयोग किया जाता है –
1. विशिष्ट उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण 3. निरीक्षण करना
2. नियमीकरण या सामान्यीकरण करना 4. परीक्षण एवं सत्यापन करना

आगमन विधि के गुण एवं विशेषताएँ:-

⇔इससे तर्क,विचार और निणर्यशक्ति का विकास होता है।
⇒ यह मनोवैज्ञानिक विधि है जिससे आत्म-निर्भरता व आत्म-विश्वास उत्पन्न होता है क्योंकि छात्र स्वयं नियम की खोज करते हैं।
⇔ संदर्भ के अनुसार व्याकरण पढाई जाती है।

⇒ व्याकरण अध्ययन के लिए यह सुलभ विधि है।
⇔ इस विधि की सहायता से विभिन्न नियमों, सम्बन्धों, सूत्रों तथा नवीन सिद्धान्तों आदि का प्रतिपादन करने में सहायता मिलती है।
⇒यह छोटी कक्षाओं के लिए सर्वाधिक उपयोगी एवं उपयुक्त विधि है।

⇒ इस विधि में बालक स्वयं उदाहरण निरीक्षण और परीक्षण के द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं। इसलिए इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता हैं।
⇔ आगमन विधि द्वारा बालकों की मानसिक शक्तियों यथा-आलोचनात्मक, निरीक्षण, तर्क विचार एवं निणर्य शक्ति का विकास होता है। यह शिक्षण की एक श्रेष्ठ विधि हैं।

⇒ यह एक वैज्ञानिक विधि है क्योंकि इस विधि द्वारा अर्जित ज्ञान प्रत्यक्ष तथ्यों पर आधारित होता है।
⇔ इसमें बालक सदैव नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक बना रहता हैं।
⇒ इसमें नियम की खोज बालक स्वयं करते हैं जिससे उनमें आत्म-विश्वास की वृद्धि होती है। इसमें बालक अधिक क्रियाशील रहते हैं।
⇔ इस विधि के द्वारा बालक को नियम, सूत्रों का निर्धारण एवं सामान्यीकरण की प्रक्रिया का ज्ञान हो जाता है।

⇒ यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योंकि इसमें मनोहिन्दी के विभिन्न महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का अनुकरण किया जाता है।
⇔ इस विधि द्वारा बालकों को स्वयं कार्य करने की प्रेरणा मिलती है जिससे उनमें आत्म निरीक्षण तथा आत्म विश्वास की वृद्धि होती है।
⇒ इसके द्वारा बालकों में उत्सुकता एवं रुचि बनी रहती है।
⇔ इसके द्वारा बालक उदाहरणों की सहायता से स्वयं ज्ञान प्राप्त करते हैं जिसके कारण वे थकान का अनुभव नहीं करते तथा नवीन ज्ञान की प्राप्ति में सक्रिय बने रहते हैं।

⇒ इसमें बालक की रुचि का विकास होता है जिससे विषय सरल बन जाता हैं।
⇔यह बालक की सूक्ष्म बुद्धि एवं सूझ की वृद्धि के लिए उपयोगी है।
⇒ इस विधि द्वारा आसानी से नियम का निर्माण किया जा सकता है जिससे छात्रों मे जाँच करने व पुष्टि करने की आदत पङती है।
⇔ इस विधि में छात्र अधिक चैतन्यता प्रदर्शित करता हैं।
⇒ इसमें बालक स्वयं ही अपने परिश्रम के आधार पर सामान्य नियमों की ओर गति करते हैं।

आगमन विधि की सीमाएँ एवं दोष:-

⇔ इस विधि द्वारा बालकों में समस्या समाधान की योग्यता एवं क्षमता का विकास संभव नहीं है।
⇒ नियमीकरण अथवा सामान्यीकरण के लिए प्रत्यक्ष उदाहरणों का चयन एवं प्रस्तुतीकरण शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिए आसान काम नहीं है। अप्रशिक्षित शिक्षक इस प्रणाली का उचित रूप से प्रयोग नहीं कर सकता।

⇔ इस विधि की गति अत्यन्त धीमी है जिससे इसके द्वारा ज्ञान प्राप्ति में समय और परिश्रम अधिक लगता हैं।
⇒ इस विधि का प्रयोग करने के लिए पर्याप्त बुद्धि, सूझ-बूझ एवं परिश्रम की आवश्यकता होती है। अतः सभी स्तर के बालकों के लिए इसके द्वारा ज्ञान प्राप्त करना आसान नहीं है।
⇔ यह विधि निम्न कक्षाओं के लिये ही उपयोगी है क्योंकि उच्च कक्षाओं में पाठ्यक्रम इतना विस्तृत होता है कि इस विधि द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान सीमित समय में प्राप्त करना संभव नहीं है।

निगमन शिक्षण विधि

निगमन शिक्षण विधि

निगमन विधि में पहले नियम बता दिया जाता है, बाद में उदाहरणों द्वारा नियम को पुष्ट किया जाता है। इस विधि में सिद्धान्त या परिभाषा को पहले बता दिया जाता है, बाद में उस सिद्धान्त का प्रयोग बताया जाता हैं। दूसरे शब्दों में , निगमन विधि में सामान्य से विशेष की ओर चलते हैं। आगमन विधि के लिये निगमन विधि पूरक विधि है। इन दोनों विधियों के बीच कोई विरोध नहीं है।

निगमन विधि का आधार दर्शनशास्त्र है। यह धारणा है कि सत्य शाश्वत व अपरिवर्तनीय होता हैं। इसी धारणा के अनुसार निगमन विधि भी नियमों की शाश्वतता व अपरिवर्तनीयता को सिद्ध करने का प्रयास करती है।

- निगमन विधि आगमन विधि के बिल्कुल विपरीत है। निगमन विधि में हम एक परिभाषा/सामान्य नियम या सूत्र को सत्य मान लेते हैं और उसे विशिष्ट उदाहरणों या परिस्थितियों में लागू करते हैं।
- नियम यथार्थ तथ्यों की व्याख्या करने के साधन होते हैं।
- इस विधि में निगमन तर्क का प्रयोग किया जाता है।
- निगमन विधि में अभिधारणाओं, आधारभूत तत्वों तथा स्वयंसिद्धियों की सहायता ली जाती हैं।
- निगमन विधि का प्रयोग उच्च कक्षाओं के शिक्षण में अधिक किया जाता है।
  निगमन विधि के दो रूप हैं –
  1.सूत्र प्रणाली
  2. पाठ्यपुस्तक प्रणाली

परिभाषा – लैंडन के अनुसार, 'निगमन विधि द्वारा शिक्षण में पहले परिभाषा या नियम स्पष्ट किया जाता है तत्पश्चात् उसके अर्थ की व्याख्या की जाती हैं और अंत में तथ्यों का प्रयोग करके उसे पूर्णरूप से स्पष्ट किया जाता है।'

निगमन विधि के चरण

1. परिभाषा – शिक्षक छात्रों के समक्ष कोई परिभाषा प्रस्तुत करता है।
2. उदाहरण – शिक्षक परिभाषा को सत्य सिद्ध करने के लिए उदाहरण का प्रयोग करता है।
3. निष्कर्ष – शिक्षक उदाहरण के द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है।
4. परीक्षण – छात्र उदाहरण की सहायता से किसी निष्कर्ष का परीक्षण करते हैं।

कार्य विधिः-

⇒ निगमन विधि में सूक्ष्म से स्थूल की ओर, सामान्य से विशिष्ट की ओर तथा प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर या नियम से उदाहरण की ओर अग्रसर होते हैं।

⇒निगमन विधि में बालकों के सम्मुख सूत्रों, नियमों तथा सम्बन्धों आदि को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

⇒ बालक बताये गये नियमों, सिद्धान्तों एवं सूत्रों को याद करके कण्ठस्थ कर लेते हैं।

अज्ञात से ज्ञात की ओर सूक्ष्म से स्थूल की ओर
अमूर्त से मूर्त की ओर सामान्य से विशेष की ओर
नियम से उदाहरण की ओर प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर

निगमन विधि के गुण एवं विशेषताएँ

⇒ यह अमनोवैज्ञानिक विधि है।

⇒ जब समयाभाव हो तो उन परिस्थितियों में इस विधि का उपयोग करना चाहिए।

⇒ जब बालक आगमन विधि के नियम और परिभाषाओं, की खोज कर लेता है तो उसका पुष्टिकरण निगमन विधि के द्वारा बालकों को याद करा दिया जाता है।

⇒ इस विधि का प्रयोग करने पर शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को कम परिश्रम करना पड़ता है।

⇒ इस विधि द्वारा कम समय में अधिक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।

⇒ इस विधि में साधारण नियमों की खोज में समय नष्ट नहीं होता।

⇒ निगमन विधि का प्रयोग अधिक आयु के बालकों के लिए किया जाता है।

⇒ नवीन समस्याओं का समाधान इस विधि द्वारा किया जा सकता है।

⇒ इस विधि द्वारा क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। यह विधि ज्ञानार्जन की गति को तीव्र करती है।

⇒ इस विधि द्वारा नियमों, सिद्धान्तों एवं सूत्रों की सत्यता की जाँच आसानी से की जा सकती है।